सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम्।।१८।।

सत्कार=वाक्-पूजा; **मान**=दैहिकी पूजा; **पूजार्थम्**=अर्चना के लिए; **तपः**=तप; **दम्भेन**=दम्भपूर्वक; **च**=तथा; **एव**=निःसन्देह; **यत्**=जो; **क्रियते**=किया जाता है; **तत्**=वह; **इह**=इस संसार में; **प्रोक्तम्**=कहलाता है; **राजसम्**=राजस; **चलम्**=क्षणिक (और); **अध्रुवम्**=अनियत फल वाला।

अनुवाद

जो सत्कार, मान और पूजा के लिए दम्भपूर्वक किया जाता है, वह अनियत और क्षणिक फल वाला तप राजस कहलाता है।।१८।।

तात्पर्य

कभी-कभी लोगों को आकर्षित करने के लिए तथा दूसरों से सत्कार, मान और पूजा की प्राप्ति के लिए तप-त्याग का आचरण किया जाता है। ऐसे रजोगुणी मनुष्य सहायकों द्वारा अपनी पूजा करवाते हैं, यहाँ तक कि उन्हें अपना चरण-प्रक्षालन करने और धन अर्पण करने की आज्ञा भी दे देते हैं। इस उद्देश्य से दम्भपूर्वक किए जाने वाले तप का आचरण राजस है। इस प्रकार का फल क्षणिक ही होता है। ऐसा थोड़े समय तक ही चल पाता है, सदा नहीं।

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्।।१९।।

मूढग्राहेण=अविवेकपूर्ण दुराग्रह से; **आत्मनः**=अपने-आप को; **यत्**=जो; **पीडया**=पीड़ासहित; **क्रियते**=किया जाता है; **तपः**=तप; **परस्य**=दूसरे को; **उत्साद-नार्थम्**=नष्ट करने के लिए; **वा**=अथवा; **तत्**=वह; **तामसम्**=तामस; **उदाहृतम्**=कहा जाता है।

अनुवाद

जो तप अविवेकपूर्ण हठ के साथ अपने आत्मा को पीड़ित करते हुए अथवा दूसरों के नाश या अनिष्ट के लिए किया जाता है, वह तामस है।।१९।।

तात्पर्य

इतिहास हिरण्यकशिपु जैसे मूढ़ों के उदाहरणों से भरा हुआ है, जिन्होंने अमर बनने और देवताओं के नाश के लिए कठोर तप किया। हिरण्यकशिपु ने ब्रह्माजी से ये दोनों वरदान माँगे थे; परन्तु अन्त में वह श्रीभगवान् द्वारा मारा गया। किसी असम्भव वस्तु के लिए तप करना निश्चित रूप से तामस तप की श्रेणी में है।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।२०।।

दातव्यम्=दान देना कर्तव्य है; **इति**=इस प्रकार; **यत्**=जो; **दानम्**=दान; **दीयते**=दिया जाता है; **अनुपकारिणे**=प्रत्युपकार की इच्छा न रखकर; **देशे**=देश;